मनीषा गुप्ता जयपुर, राजस्थान

बौद्धिक संपदा अधिकारों पर विशेष लेख बहुत अच्छा लगा। करन भाटिया कहते हैं, ''बौद्धिक संपदा अधिकार भारत के लिए उतने ही अहम हैं जितना कि मूल सुविधाएं।'' नए सृजन करने वालों के बौद्धिक संपदा अधिकारों की रक्षा का मसला और ज़्यादा महत्वपूर्ण होता जा रहा है और बौद्धिक संपदा अधिकारों की रक्षा का ढांचा बनाना ऐसा अगला कदम है जिसे तुरंत उठाना ज़रूरी है। भारत को दुनिया ने ''मानव संसाधन'' और ''ज्ञान'' के केंद्र के रूप में स्वीकार किया है। यह दुनिया का ''बौद्धिक संपदा अधिकार'' केंद्र भी है। विश्व व्यापार संगठन और ट्रिप्स व्यवस्था में प्रत्यक्ष लाभों के बज़ाय अप्रत्यक्ष लाभों पर ध्यान केंद्रित हुआ है। नए सृजन से जुड़े उद्योग और ज्ञान आधारित लघु एवं मध्यम उपक्रमों के अस्तित्व के लिए नई खोज, बौद्धिक संपदा का सृजन और संरक्षण बहुत ज़रूरी है।

जैसा कि डोमिनिक कीटिंग ने कहा है, बौद्धिक संपदा अधिकारों का संरक्षण सभी क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण है- कला से लेकर सॉफ़्टवेयर और उपभोक्ता उत्पादों तक। मैं इसका हमारे... सांस्कृतिक पारंपरिक ज्ञान तक विस्तार करना चाहूंगा। गरीब ग्रामीणों के लिए समृद्धि लाने और हमारे देश के टिकाऊ विकास के लिए पात्र ज़मीनी, सृजनशील समुदायों के बौद्धिक संपदा अधिकारों की रक्षा महत्वपूर्ण रास्ता है।

बौद्धिक संपदा अधिकारों की रक्षा से... और ज़्यादा सृजन और नई खोज को प्रोत्साहन मिलता है। इससे नकली चीज़ों की समस्या पर भी अंकुश लगता है। भारत के फैशन और फिल्म उद्योग में हाल के कॉपीराइट अधिकारों के उल्लंघन इस बात का संकेत हैं कि हमें तुरंत बौद्धिक संपदा अधिकारों का ढांचा बनाने की ज़रूरत है जो वैश्वीकरण की चुनौती को व्यापारिक अवसरों में तब्दील करने में मदद करेगी।

जॉन अलेक्जेंडर चावनी, नागपुर

सैद्धांतिक तौर पर बौद्धिक संपदा अधिकारों - कॉपीराइट, ट्रेडमार्क, पेटेंट- के पक्ष में होना समझ में आता है। लेकिन भौतिक, चिकित्सा, इंजीनियरी विज्ञान में प्रौद्योगिकी और नई खोजों के ज़रिये ज्ञान का सृजन ज़्यादतर पश्चिमी देशों में हुआ है, उसमें भी ज़्यादातर अमेरिका में...। इसलिए यदि पश्चिम के ज्ञान का सृजन करने वाले देश बौद्धिक संपदा अधिकारों पर ज़ोर देते हैं तो वे बहुत हद तक सही हैं। आखिरकार उन्होंने ज्ञान का सृजन किया है और वे इससे अधिक से अधिक आर्थिक लाभ कमाना चाहते हैं।

जब धन की बात होती है तो मानवता, दया और परोपकार की बात ज़्यादा नहीं ठहरती...। और ज्ञान का सृजन न करने वाले देश पश्चिमी देशों या दुनिया में कहीं भी उपलब्ध तैयार ज्ञान की नकल कर इससे अधिकाधिक लाभ उठाना चाहेंगे।

भारत और दुनिया के साधारण नागरिक की हैसियत से मुझे यह लगता है कि बौद्धिक संपदा अधिकारों के संरक्षण का ढिंढोरा पीटने वाले पश्चिम के ज्ञान सृजित करने वाले देशों को विशेष रूप से थोड़ा दयालु दृष्टिकोण अख्तियार करना चाहिए और धन या लाभ को थोड़ी कम प्रमुखता देनी चाहिए।

एस.एम. गोयल अजमेर, राजस्थान

कई दशक पहले अमेरिकी समाजशास्त्री सी. पी. स्नो ने कहा था, ''बदलाव की दर इतनी तेज़ हो गई है कि हमारी कल्पना इसकी बराबरी नहीं कर सकती।'' तब से विश्व परिदृश्य बहुत ज़्यादा बदल गया है। पहले के लोग जिन मानदंडों, मूल्यों और नैतिकता में विश्वास करते थे, वे अब नहीं रहे। ऐसे में अमेरिका या कहीं और बने कानून के तहत नई खोज और आविष्कारों के संरक्षण और उन पर लगी सीमाओं का व्यवहार्य बने रहना बहुत मुश्किल है। चमक-धमक वाले प्रचार के बूते उपभोक्ताओं को मूर्ख बनाकर व्यापारीकरण और उपभोक्तावाद सबसे ज़्यादा लाभ उठा रहे हैं। पैसा बनाने की अंधी दौड़ में असली उत्पाद, भले ही गारंटीशुदा ट्रेडमार्क का हो, पीछे छूट रहा है। कला और सॉफ़्टवेयर उत्पाद रिमिक्स स्वरूप में बाज़ार में छाए हैं। पुस्तकों के कॉपीराइट के बावजूद उनके सस्ते चोरी से निकाले संस्करण बाज़ार में पैठ बनाए हुए हैं। कोका कोला, जिलेट, कैनन और फिलिप्स के बहुत से नकली संस्करण मौजूद हैं। इसलिए बौद्धिक संपदा अधिकारों से उद्देश्य पूरा नहीं होने वाला। लेकिन सत्ता में बैठे लोगों को मानव समुदाय के हित में उत्पादों की गुणवत्ता सुनिश्चित करनी चाहिए।

वीरेश मलिक नई दिल्ली

भारत में अमेरिकी कारों के इतिहास पर आधारित दिलचस्प आलेख में मैं कुछ जानकारी जोड़ना चाहूंगा।

1950 के दशक के मध्य तक अमेरिकी ट्रकों की उपस्थिति और इतिहास दुर्भाग्य से कुछ इस तरह का रहा कि वे कबाड़घर जा पहुंचे। लेकिन आज भी भारत के विभाजन के दौर पर आधारित फ़िल्मों को इनके बिना नहीं फ़िल्माया जा सकता। नीलगिरी क्षेत्र, जामनगर (गुजरात) के आसपास और अमृतसर के बाहरी इलाके में भारत-पाकिस्तान सीमा पर डॉज और फ़ार्गो ट्रक आज भी देखे जा सकते हैं।

नई दिल्ली की सड़कों से ''प्रदूषण नियंत्रण'' के नाम पर बाहर कर दिए गए हार्ले-डैविडसन के परिवर्तित संस्करण एक और पहलू है जिसके कारण शायद भारत में अमेरिका से सुपर-बाइक के नए सिरे से आगमन की शुरुआत हुई हो। मुझे मेरी युवावस्था याद आती है जब दक्षिण दिल्ली के साउथ एक्सटेंशन इलाके में इंडियन चीफ़ मोटरसाइकिलें दौड़ती नज़र आती थीं।

फ़ोर्ड ए मॉडल अन्य देशों में ज़्यादा लोकप्रिय नहीं हुआ लेकिन अपनी ताकत और मजबूती के चलते उसने भारत में अच्छा प्रदर्शन किया। इसके बड़े-बड़े पहिए ऐसे थे कि नदी भी पार की जा सके। हालांकि इसके लिए कोई मुहमांगा दाम नहीं देगा लेकिन यह ऐसा विंटेज वाहन है जो कीमत और देखरेख के लिहाज से आपके दायरे में आ सकता है। मिलपिटास, कैलिफोर्निया में एक मॉल में जाने के दौरान मुझे सिलिकॉन वैली और मोटरिंग के बीच संबंध का पता चला। यह ऑन द स्पॉट वहीं बनाई जाती है जहां फ़ोर्ड मस्टैंग बनाती थी। मुझे औरों के बारे में पता नहीं लेकिन मैं इसे पवित्र स्थल मानता हूं।

अमेरिका में भारत के प्रौद्योगिकीविदों का ऐसा छोटा लेकिन उभरता समूह है जो अपने कॉलेज के जमाने की अमेरिकी कारों को समय निकालकर उन्हें पटरी पर लाने की कोशिश करता है। आप इनमें से एक को यहां देख सकते हैं:
http://www.eslurf.com/corvette